

रूवस्स संकलणासंकलणमेत्तपढमणिसेगा पावेति । पुणो एदेसिं जहासरूवेण आगमण-
मिच्छामो त्ति संकलणासंकलणगुणिद णिसेगभागहारं संकलणासंकलणासंकलणाए
रूवूणगच्छुभवाए इमं भागहारं ओवट्टिय विरलेदूण उवरिमएगरूवधरिदं समखंडं
करिय दिण्णे संकलणासंकलणासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसा पावेति । पुणो एदेण
पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणिदे इच्छिददव्वं होदि । पुणो अवणिददव्वे
त्पमाणेण कीरमाणेऽऽ उप्पणरूवपमाणं वुच्चदे । तं जहा- रूवूणहेट्टिमविरलण-
मेत्तगोवुच्छविसेसेसु जदि एगरूवपवखेवो लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं
लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय लद्धमुवरिमविरलणाए पक्खविय
समयपबद्धे भागे हिदे णाणासमयपबद्धणाणासमयओकड्ढिदणाणासमयगलिददव्वमाग-
च्छदि । एवं णाणासमयपबद्धणाणासमयओकड्ढिदणाणासमयगलिददव्वस्स परूवणा
गदा । एवं भागहारपमाणाणगमो समत्तो ।

संपधि समयपबद्धपमाणाणुगमो वुच्चदे । तं जहा- णेरइयचरिमसमए उदयगदगो-
वुच्छा एगसमयपबद्धमेत्ता, तत्थ पढमणिसेगप्पहुडि जाव चरिमणिसेगो त्ति सव्वणि-
सेगाणमुबलंभादो । बिदियसमयगोवुच्छा किंचूणसमयपबद्धमेत्ता, तत्थ पढमणिसेगा-

एक अंकके प्रति संकलासंकलन प्रमाण प्रथम निषेक प्राप्त होते हैं । फिर चूंकि इनका यथा-
स्वरूपसे लाना अभीष्ट है, अत एव एक कम गच्छसे उत्पन्न संकलनासंकलनसे इस भागा-
हारको अपवर्तित कर लब्धका विरलन करके उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड
करके देनेपर संकलनासंकलन प्रमाण गोपुच्छविशेष प्राप्त होते हैं । फिर इस प्रमाणसे उप-
रिम सब अंकोंके प्रति प्राप्त द्रव्योंमेंसे कम करनेपर इच्छित द्रव्य होता है । पुनः कम किये
गये द्रव्यको उसके प्रमाणसे करनेपर उत्पन्न अंकोंका प्रमाण कहते हैं । वह इस प्रकार है—
एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है
तो उपरिम विरलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमें वह कितना पाया जावेगा, इस प्रकार प्रमाणसे
फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर लब्धको उपरिम विरलनमें मिलाकर समयप्रबद्धमें भाग
देनेपर नाना समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें नष्ट हुआ द्रव्य
आता है । इस प्रकार नाना समयप्रबद्धोंके नाना समयोंमें अपकृष्ट द्रव्यमेंसे नाना समयोंमें
नष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा समाप्त हुई । इस प्रकार भागहारप्रमाणानुगम समाप्त हुआ ।

अब समयप्रबद्धप्रमाणानुगमकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस प्रकारसे—
चरमसमयवर्ती नारकीकी उदयगत गोपुच्छा एक समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि,
उसमें प्रथम निषेकसे लेकर अन्तिम निषेक तक सब निषेक पाये जाते हैं । द्वितीय
समयमें स्थित संचय गोपुच्छा कुछ कम एक समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि, उसमें

भावादो । तदियसमयगोबुच्छा ॐ किंचूणसमयपबद्धमेत्ता, पढम-बिदियणिसेगाभावादो । चउत्थसमयगोबुच्छा ॐ वि किंचूणसमयपबद्धमेत्ता, पढम बिदिय-तदियणिसेगा-भावादो ॐ । एवं णेदव्वं जाव गुणहाणिचरिमसमओ त्ति ।

संपधि रूवाहियगुणहाणिमेत्तद्धानं चडिदूण द्विदसंचयगोबुच्छा चरिमगुणहाणि-दव्वेणूणसमयपबद्धमेत्ता । एत्तो उवरि एगादिएगुत्तरकमेण बिदियगुणहाणिगोबुच्छा-ओ अवणिय णेदव्वं जाव बिदियगुणहाणिचरिमसमओ त्ति । पुणो दोगुणहाणीओ समयाहियाओ चडिदूण द्विदसंचयगोबुच्छा चरिम-दुचरिमगुणहाणिदव्वेणूणसमयपब-द्धस्स चदुब्भागमेत्ता । उवरि एगादिएगुत्तरकमेण तदियगुणहाणिगोबुच्छाणमवणयणं कादूण णेदव्वं । एवं जाणिदूण वत्तव्वं जाव चरिमगुणहाणिचरिमसंचयगोबुच्छा त्ति । णवरि उवरि चडिदगुणहाणिसलागमेत्तचरिमाविगुणहाणिदव्वं समयपबद्धम्मि सोहिय गुणहाणिसलागाणमण्णोण्णम्भत्थरासिणा समयपबद्धे भागे हिदे इच्छिदगुणहाणीए पढमसंचयगोबुच्छा आगच्छवि त्ति वत्तव्वं ।

प्रथम निषेकका अभाव है । तृतीय समयमें स्थित संचय गोपुच्छा कुछ कम समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि, उसमें प्रथम और द्वितीय निषेकोंका अभाव है । चतुर्थ समयमें स्थित गोपुच्छा भी कुछ कम समयप्रबद्ध प्रमाण है, क्योंकि, उसमें प्रथम द्वितीय और तृतीय निषेकोंका अभाव है । इस प्रकार गुणहानिके अन्तिम तक ले जाना चाहिये ।

अब एक अधिक गुणहानि प्रमाण अध्वान जाकर स्थित संचय गोपुच्छा अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे कम एक समयप्रबद्ध प्रमाण है । इससे आगे एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे द्वितीय गुणहानिकी गोपुच्छाओंको कम करके द्वितीय गुणहानिके अन्तिम समय तक ले जाना चाहिये । पुनः एक समयसे अधिक दो गुणहानियां जाकर स्थित संचय गोपुच्छा चरम और द्विचरम गुणहानिके द्रव्यसे हीन एक समयप्रबद्धके चतुर्थ भाग प्रमाण है । इससे आगे एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे तृतीय गुणहानिकी गोपुच्छाओंको कम करके ले जाना चाहिये । इस प्रकार अन्तिम गुणहानिकी अन्तिम संचय गोपुच्छा तक जानकर कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि आगे गत गुणहानियोंकी शलाकाओंके बराबर चरम आदि गुणहानियोंके द्रव्यको समयप्रबद्धमेंसे कम करके गुणहानिशलाकाओंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका समयप्रबद्धमेंसे भाग देनेपर इच्छित गुणहानिकी प्रथम संचय गोपुच्छा आती है, ऐसा कहना चाहिये ।

उदाहरण— चरमसमयवर्ती नारकीके द्वारा चरम समयसे चार गुणहानि पहिले जो समयप्रबद्ध बांधा गया था उसकी चार गुणहानियां उदयमें आ चुकी हैं, दो

⊙ ताप्रतिपाठोऽयम् । अप्रती ' तदियसमयसंचिदगोबुच्छा ', काप्रती ' तदियसमयसंचयगोबुच्छा ' इति पाठः । ⊛ अप्रती ' चउत्थसमगोबुच्छा ' इति पाठः । ⊙ प्रतिषु - ' तदियगोबुच्छाभावादो ' इति पाठः ।

संपहि उदयगोवुच्छा समयपबद्धमेत्तं ठविय $\boxed{६३००}$ गुणहाणीए गुणिदे गुण-
हाणिमेत्तसमयपबद्धमेत्ता होंति $\boxed{६३००।८।}$ पुणो रूवूणगुणहाणीए संकलणाए
पढमणिसेगे गुणिदे रूवूणगुणहाणिसंकलणमेत्तपढमणिसेगा होंति $\boxed{५१२।७।५।}$
पुणो एदे डुरुवूणगुणहाणिसंकलणा-संकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेहि \odot ऊणा त्ति
कट्टु गोवुच्छविसेसे

एकोत्तरपदवृद्धो रूपाद्यैर्भाजितश्च पदवृद्धः ।

गच्छस्संपातफलं समाहृतं सन्निपातफलम् ॥ १५ ॥

एवीए अज्जाए आणिय पढमणिसेगपमाणेण कदे एत्तियं होदि $\boxed{५१२।६।१२।}$ ।

एवमेदाओ तिणिण वि रासीओ पुधं ठवेदव्वाओ पुण सव्वगुणहाणिदव्वमप्पप्पणो
पढमणिसेगपमाणेण कदे दुविहरिणेण सह एत्तिया चेव होंति । णवरि गोवुच्छाओ

गुणहानियोंका द्रव्य संचित है । चार गुणहानियोंका द्रव्य - $३२०० + १६०० + ८०० + ४००$
 $= ६०००$; $६४०० - ६००० = ४००$; चार गुणहानियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि $२ \times २ \times २$
 $\times ४ = १६$; $६४०० - १६ = ४००$ ।

अब उदयगोपुच्छाको समयप्रबद्ध (६३००) प्रमाण स्थापित करके गुणहानिसे गुणित
करनेपर वह गुणहानि मात्र समयप्रबद्धोंके बराबर होती है ६३००×८ । फिर एक कम
गुणहानिके संकलनसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर एक कम गुणहानिके संकलन प्रमाण
प्रथम निषेक होते हैं - (प्रथम निषेक ५१२; एक कम गुणहानि ७; उसका संकलन
 $७ \times ५ = २८$) $\frac{५१२ \times ७ \times ८}{२}$ । पुनः ये उपर्युक्त निषेक दो अंकोंसे कम गुणहानिके दो वार
संकलन प्रमाण गोपुच्छविशेषोंसे हीन हैं, ऐसा करके गोपुच्छविशेषोंको

एकको आदि लेकर एक अधिक क्रमसे पद प्रमाण वृद्धिको प्राप्त संख्यामें, अन्तर्म
स्थापित एकको आदि लेकर पद प्रमाण वृद्धिगत संख्याका भाग देनेपर गच्छके बराबर
संपातफल अर्थात् प्रत्येक भंगका प्रमाण आता है । इसको आगे आगे स्थापित संख्याओंसे
गुणित करनेपर सन्निपातफल अर्थात् द्विसंयोगी आदिक भंगोंका प्रमाण प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

इस आर्या (गाथा) के अनुसार लाकर $(\frac{६}{१} \times \frac{७}{२} \times \frac{८}{३} = ५६; ३२ \times ५६)$ प्रथम
निषेकके प्रमाणसे करनेपर इतने होते हैं $\frac{५१२ \times ७ \times ८}{२}$ । इस प्रकार इन तीनों ही
राशियोंको पृथक् स्थापित करना चाहिये । सब गुणहानियोंके द्रव्यको अपने अपने
प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर दो प्रकारके ऋणके साथ इतने ही होते हैं ।

अप्रती 'संकलणासंकलणासंकलण' इति पाठः । अ-काप्रत्योः 'विसेसंहि', ताप्रती 'विसेसम्हि'
इति पाठः । अ-काप्रत्योः 'समाहितं' इति पाठः । अ-क-प्रत्योः 'समाहृतसन्नि' इति पाठः । व. ल.
पुस्तक ५ पृ. १९३. क. प. २, पृ. ३००

गोपुच्छविसेसा च अद्भुतेण गच्छन्ति											
६३००	८	३१००	८	१५००	८	७००	८	३००	८	१००	८
५१२	७८	२५६	७८	१२८	७८	६४	७८	३२	२	१२	२
७८	१६	७८	५१२	६७	२५६	६७	१२८	६७	६४	६७	३२
२	२	२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

एवाणि दो वि रिणाणि धणंते* ठविय एदेसि संकलणं कस्सामो । तं जहा— रूवा-
हियणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा दुर्वा-
हियणाणागुणहाणिसलागाहि ऊणेण णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय
अण्णोण्णभत्थरासिणा रूवूणेणोवट्टिदेण गुणहाणिमेत्तसमयपबद्धे गुणिदे सव्वदव्वमा-
गच्छन्ति ६३०० ८ १२० । पुणो णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय
अण्णो- ६३ ण्णभत्थरासिणा रूवूणेण अण्णोण्णभत्थरासिअद्भो-

विशेषता इतनी है कि गोपुच्छ और गोपुच्छविशेष आधे आधे स्वरूपसे जाते हैं— ६३०० × ८,
३१०० × ८, १५०० × ८, ७०० × ८, ३०० × ८, १०० × ८ । ५१२ × (७/२ × ६), २५६ × (७/२ × ६),
१२८ × (७/२ × ६), ६४ × (७/२ × ६), ३२ × (७/२ × ६), १६ × (७/२ × ६) ५१२ × (६/२ × ७),
२५६ × (६/२ × ७), १२८ × (६/२ × ७), ६४ × (६/२ × ७), ३२ × (६/२ × ७), १६ × (६/२ × ७) ।
इन दोनों ही ऋण राशियोंको धनके अन्तमें स्थापित करके इनका संकलन करते हैं । वह इस
प्रकार है— एक अधिक नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणा,
करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे दो अधिक नानागुणहानिशलाकाओंको कम करके शेषको
नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके परस्पर गुणित करनेपर प्राप्त
राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे अपवर्तित करना चाहिये । इस प्रकार जो लब्ध
हो उससे गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्धको गुणित करनेपर समस्त द्रव्य आता है— (एक
अधिक नानागुणहानिशलाकाए ६+१=७; १ १ १ १ १ १ इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि
१२८; दो अधिक नानागुणहानिशलाका ६+२=८; १२८-८=१२०; ना. गु. शलाका
६; १ १ १ १ १ १ इनकी अन्योन्याभ्यस्त राशि ६४; ६४-१=६३) ६३०० × ८ × १ १
= (६३०० × ८) + (३१०० × ८) + (१५०० × ८) + (७०० × ८) + (३०० × ८) +
(१०० × ८) = ९६००० । फिर नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके
परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करके शेषको अन्योन्याभ्यस्त
राशिके अर्ध भागसे अपवर्तित करे । ऐसा करनेसे जो लब्ध हो उससे दोनों ही ऋणराशि-
योंको गुणित करनेपर इतना होता है— ५१२ × (७/२ × ६) × ६/२ = (५१२ × २८) + (२५६
× २८) + (१२८ × २८) + (६४ × २८) + (३२ × २८) + (१६ × २८) = २८२२४ ।
५१२ × (६/२ × ७) × ६/२ = (५१२ × ४२) + (२५६ × ४२) + (१२८ × ४२) + (६४ ×

* ताप्रतो ' धणं ते ' इति पाठः ।

वट्टिदेण दो वि रिणरासीओ गुणिदे एत्तियं होदि | ५१२ | ७८ | ६३ | ५१२ | -
 | ६७ | ६३ | । पुणो हेट्टिमरिणरासिमुवरिमरिण | | २ | ३२ | |
 | १२ | ३२ | रासिम्हि सोहिय समयपबद्धपमाणेण कदे एगरूवस्स असंखेज्जविभागे-
 णूणअट्टारह-दसभागेहि गुणहाणिगुणिदमेत्ता समयपबद्धा लब्धन्ति । तेसि संदिट्ठी
 एसा | ६३०० | ७ | ४२ | ८ | । एदेसु किंचूणदोगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धेसु सोहिदेसु
 | १०० | | ६ | | गुणहाणीए सादिरेयअट्टारसभागेणूणदिवड्डुगुणहाणि-
 मेत्ता समयपबद्धा आगच्छन्ति । तेसि संदिट्ठी एसा | $\frac{११७}{६३६}$ | १)

अधवा, चरिमसमयणेरइयस्स चरिमगुणहाणिदब्बम्मि रूवूणगुणहाणीए
 संकलणासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु अवणिदेसु | ७ | ८ | ९ | अवसेसं गुणहाणि-
 संकलणमेत्तचरिमणिसेगा होति । तेसि पमाणमेदं | ६ | | ९ | ८ | ९ | ।
 पुव्विल्लरूवूणगुणहाणिसंकलणासंकलणमेत्तगोवुच्छविसेसेसु चरिम- | २ |
 णिसेयपमाणेण कदेसु रूऊणगुणहाणिसंकलणाए

$\frac{४२}{६३}) + (३२ \times \frac{४२}{६३}) + (१६ \times \frac{४२}{६३}) = ३५२८$ । फिर नीचेकी ऋण राशिकी
 ऊपरकी ऋण राशिमेंसे घटाकर समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर एक अंकके असंख्यातवें भागसे
 कम अठारह बटे दस भागोंसे गुणहानिगुणित मात्र समयप्रबद्ध पाये जाते हैं । उनकी संदृष्टि
 यह है-- $[(५१२ \times \frac{७८}{६३} \times \frac{६३}{६३}) - (५१२ \times \frac{६३}{६३} \times \frac{६३}{६३}) = ८ \times (७ \times ८ \times ६३) - (८ \times ७ \times ६३) = ७ \times (७ \times ८ \times ६३) = \frac{६३}{६३} \times ७ \times ८ \times \frac{६३}{६३} =) \frac{६३}{६३}$
 $\times ७ \times \frac{६३}{६३} \times ८$ । इनको कुछ कम दो गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्धोंमेंसे घटानेपर गुणहानिके
 साधिक अठारहवें भागसे कम डेढ गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्ध आते हैं । उनकी संदृष्टि
 यह है-- $११ \frac{६३}{६३}$ ।

अथवा, चरम समयवर्ती नारकीकी अन्तिम गुणहानिके द्रव्यमेंसे एक कम गुणहानिके
 संकलनासंकलन प्रमाण $\frac{१}{१} \times \frac{६}{६} \times \frac{१}{१} = ८४$ गोपुच्छविशेषोंको कम करनेपर अवशेष गुण-
 हानिके संकलन मात्र अन्तिम निषेक होते हैं । उनका प्रमाण यह है-- अन्तिम निषेक ९;
 गुणहानिसंकलन $८ \times \frac{१}{१}$; $९ \times (\frac{८}{६})$ । पूर्वोक्त एक कम गुणहानिके संकलनासंकलन
 प्रमाण गोपुच्छविशेषोंको चरम निषेकके प्रमाणसे करनेपर एक कम गुणहानिके संकलनके
 तृतीय भाग चरम निषेक होते हैं-- पूर्वोक्त गोपुच्छ ८४; अन्तिम निषेक ९; एक कम गुण-
 हानिका संकलन $\frac{७८}{६} = २८$; इसका तृतीय भाग $\frac{२८}{३}$; $८४ = (९ \times \frac{२८}{३})$ ।

प्रतिषु | $\frac{११७}{६७६}$ | ।

ति भागमेत्तचरिमणिसेगा हं ९ | ७ | ८ | ७ । पुणो दुचरिमगुणहाणिद्विद्वद्व-
मेदम्हादो दुगुणं होदूण गुणहाणिमेत्तचरि- ६ | मगुणहाणिद्वेण अधियं होदि ।
पुणो तिचरिमगुणहाणिद्वेमेदम्हादो चउगुणं होदूण गुणहाणिमेत्तचरिम-दुचरिम-
गुणहाणिद्वेण अधियं होदि । पुणो चदुचरिमगुणहाणिद्वेमेदम्हादो अट्टगुणं होदूण
गुणहाणिमेत्तचरिम-दुचरिम (-तिचरिमगुणहाणि-) द्वेण अधियं होदि । एवं
णंदव्वं जाव चरिमसमयणेरइयपढमगुणहाणि ति । संपहि एदेस संकलणे
कीरमाणे चरिमगुणहाणिद्वेस्स मेलावणं कादव्वं । कदे गुणहाणिसंकलणाए
तिभागमसंखेज्जदिमागूणचदुहि गुणिदमेत्ता चरिमणिसेगा होति | ९ | ८ | ७ | ४ | ।

विशेषार्थ-- अन्तिम गुहाणनिका द्रवा ९+१९+३०+४२+५५+६९+८४+१००
= ४०८ है । इसमें ऊपर कम कराये गय गोपुच्छविशेषोंका प्रमाण इस प्रकार है—

द्रव्य	प्रथम निषेक	गो. विशेष
९	१×९	०
१९	२×९	१
३०	३×९	३
४२	४×९	६
५५	५×९	१०
६९	६×९	१५
८४	७×९	२१
१००	८×९	२८
४०८	३२४	८४

फिर द्विचरम गुणहानिमें स्थित द्रव्य इससे दुगुणा होकर गुणहानि मात्र अन्तिम
गुणहानिके द्रव्यसे अधिक होता है (द्विचरम गुणहानिका द्रव्य ११८+१३८+१६०+१८४
+२१०+२३८+२६८+३०० = १६१६; ४०८×२=८१६, ८×१०० = ८००, ८१६+
८०० = १६१६) । त्रिचरम गुणहानिका द्रव्य इससे चौगुणा होकर गुणहानि प्रमाण चरम
और द्विचरम गुणहानियोंके द्रव्यसे अधिक होता है [त्रिचरम गुणहानिका द्रव्य ४०३२ =
(४०८×४) + (८×१००) + (२×८००)] । चतुश्चरम गुणहानिका द्रव्य इससे आठ-
गुणा होकर गुणहानि प्रमाण चरम, द्विचरम और त्रिचरम गुणहानियोंके द्रव्यसे अधिक होता है
(चतुश्चरम गुणहानिका द्रव्य ८८६४ = (४०८×८) + (८×१००) + (८×२००) + (८×४००) ।
इस प्रकार चरम समयवर्ती नारकीकी प्रथम गुणहानि तक ले जाना चाहिये । अब इनका
संकलन करनेमें अन्तिम गुणहानिके द्रव्य (४०८) को मिलाना चाहिये । ऐसा करनेपर
गुणहानिके संकलनके तृतीय भागको असंख्यातवें भाग ($\frac{२}{९}$) से हीन चार अंकोंसे
 $\frac{३४}{९}$ गुणित करनेपर जो प्राप्त हो उतने मात्र अन्तिम निषेक होते हैं— अन्तिम निषेक
९; गुणहानिसंकलनका तृतीय भाग $\frac{८४}{९} = १२$; $९ \times (\frac{४}{९} \times \frac{७}{९} \times \frac{३६}{९}) = ४०८$ । फिर नाना-

पुणो णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा रुव्वणेण एदं गुणिदे दुगुण-दुगुणकमेण गदसम्बगुणहाणिगोबुच्छविसेससंचओ होदि । पुणो एदम्म समयपबद्धपमाणेण कदे रुवाहियगुणहाणीए सादिरेयअट्टारसभागमेत्तसमय-पबद्धा होंति । पुणो एदे पुथ ठविय । $६३०० \div ९ \div ८$ | णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा रुवा- १८ | हियणाणागुणहाणिसला-गूणेण गुणहाणिमेत्तचरिमगुणहाणिदम्बे गुणिदे अबसेसगुणहाणीणम्बवरिदम्बेसम्बद-म्बमागच्छदि । $१०० \div ८ \div ५७$ । । एदम्म समयपबद्धपमाणेण कदे असंखेज्जदिभा-गूणगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा आगच्छन्ति । एदे पुव्वदम्बम्ह पक्खित्ते गुणहाणीए सादिरेयअट्टारसभागेण्णदिवड्डुगुणहाणिमेत्तसमयपबद्धा होंति ।

गुणहानिशलाकाओंको विरलित कर दुगुणा करके उनकी एक कम अन्योन्याभ्यस्त राशिसे इसको गुणित करनेपर दुगुणे दुगुणे क्रमसे गये हुए सब गुणहानिके गोपुच्छविशेषोंका संचय होता है (अर्थात् ४०८ संख्या चरम गुणहानिमें एक बार, द्विचरममें दो बार, त्रिचरममें चार बार, चतुश्चरममें आठ बार, पंचमचरममें सोलह बार और षट्चरम गुणहानिमें वह बत्तीस बार है; इस प्रकारसे छहों गुणहानियोंमें उक्त संख्या $१+२+४+८+१६+३२ = ६३$ बार सम्मिलित है ।) इसको समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर एक अधिक गुणहानिसे साधिक अठारहवें भाग प्रमाण समयप्रबद्ध होते हैं— $६३०० \times ९ \times \frac{१}{८}$ ($४०८ \times ६३ = ६३०० \times ९ \times \frac{१}{८}$) इनको पृथक् स्थापित करके नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर दुगुणा करके उनकी एक अधिक नानागुणहानिशलाकाओंसे हीन अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणहानि प्रमाण अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर शेष गुणहानियोंका अवशिष्ट द्रव्य आता है— $१०० \times ८ \times (६४ - ७)$ ।

विशेषार्थ— चूँकि चरम गुणहानिका द्रव्य १००×८ द्विचरम गुणहानिमें एक बार, त्रिचरममें $(१०० \times ८) + (२०० \times ८)$ इस प्रकार ३ बार, चतुश्चरममें $(१०० \times ८) + (२०० \times ८) + (४०० \times ८)$ इस प्रकार ७ बार, पंचचरममें $(१०० \times ८) + (२०० \times ८) + (४०० \times ८) + (८०० \times ८)$ इस प्रकार १५ बार, और प्रथम गुणहानिमें $(१०० \times ८) + (२०० \times ८) + (४०० \times ८) + (८०० \times ८) + (१६०० \times ८)$ इस प्रकार ३१ बार सम्मिलित है; अत एव यहां इनके जोड़से $(१+३+७+१५+३१ =)$ प्राप्त ५७ संख्यासे चरम गुणहानिके द्रव्यको गुणित $(१०० \times ८ \times ५७)$ किया गया है ।

इसको समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर असंख्यातवें भागसे हीन गुणहानिके बराबर समयप्रबद्ध आते हैं । इनको पूर्व द्रव्यमें मिलानेपर गुणहानिके साधिक अठारहवें भागसे हीन डेढ गुणहानि प्रमाण समयप्रबद्ध होते हैं । $(१२ - \frac{१}{६३६} = ११\frac{६३५}{६३६}; ११\frac{६३५}{६३६} \times ६३०० = ७१३०४)$ ।

अथवा, कर्मस्थितिके सब समयप्रबद्धोंकी संचित स्वरूपसे भागहारकी प्ररूपणामें बतलाया गया उत्कृष्ट संचय युगपत् प्राप्त नहीं होता है, ऐसा कहनेवाले आचार्योंके अभि-

अथवा, कम्मट्टिदिसव्वसमयपबद्धाणं संचयिभावेण भागहारपरुवणाए परुविद-
उक्कस्ससंचओ अक्कमेण ण लब्भदि त्ति भणंताणमाइरियाणमहिप्पाएण भण्णमाणे
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता समयपबद्धा होति, ण किंचूणदिवडुमेत्ता;
सव्वसमयपबद्धाणमुक्कस्ससंचयाणुवलंभादो । एवं समयपबद्धाणुगमो समत्तो ।

गुणितकम्मंसियस्स उवरिल्लीणं (ठिदीणं) णिसेयस्स उक्कस्सपदं हेट्टि-
ल्लीणं ठिदीणं णिसेयस्स जहण्णपदं होदि त्ति कट्टु उवसंहारे भण्णमाणे कम्मट्टिदि-
आदिसमयपबद्धसंचयस्स भागहारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो होदि । होंतो
वि दिवडुगुणहाणिमेत्तो, समयपबद्धं चरिमणिसेयपमाणेण कीरमाणे दिवडुगुणहाणि-
मेत्तचरिमणिसेगुवलंभादो । कम्मट्टिदिआदिसमयपबद्धसंचओ चरिमणिसेयपमाणमेत्तो
होदि त्ति कथं णव्वे ? सण्णिपंचिदियपज्जत्तएण उक्कस्सजोगेण उक्कस्ससंकिलि-
ट्ठेण उक्कस्सियं ट्टिदिं बंधमाणेण जेतिया परमाणू कम्मट्टिदिचरिमसमए णिसित्ता
तेत्तियमेत्तमग्गट्टिदिपत्तयं होदि त्ति कसायपाहुडे उवदिट्टत्तादो । पदेसविरइयअप्पा-
बहुएण कथं ण विरोधो ? (ण,) गुणित-धोलमाणादिपदेसरचणमस्सिदूण
तप्पवुत्तीदो ।

प्रायसे कथन करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र समयप्रबद्ध होते हैं, न कि कुछ कम
डेह गुणहानि प्रमाण; क्योंकि, सब समयप्रबद्धोंका उत्कृष्ट संचय पाया नहीं जाता । इस
प्रकार समयप्रबद्धानुगम समाप्त हुआ ।

गुणितकर्मांशिक जीवके उपरिम स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद और अधस्तन
स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद होता है, ऐसा मानकर उपसंहारकी प्ररूपणामें कर्मस्थितिके
आदिम समयप्रबद्धके संचयका भागहार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होता है । उतना
होकर भी वह डेह गुणहानि प्रमाण है, क्योंकि, समयप्रबद्धको अन्तिम निषेकके प्रमाणसे
करनेपर डेह गुणहानि मात्र अन्तिम निषेक पाये जाते हैं ।

शंका— कर्मस्थितिके आदिम समयप्रबद्धका संचय अन्तिम निषेक प्रमाण होता
है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह " जो संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव उत्कृष्ट योगसे सहित है, उत्कृष्ट
संकलेशको प्राप्त है, उत्कृष्ट स्थितिको बांध रहा है; उसके द्वारा जितने परमाणु कर्मस्थितिके
अन्तिम समयमें निषिक्त किये जाते हैं उतने मात्र अग्रस्थिति प्राप्त होते हैं " इस कषाय-
प्राभृतमें प्राप्त उपदेशसे जाना जाता है ।

शंका— ऐसा होनेपर प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वके साथ विरोध क्यों न होगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उक्त अल्पबहुत्वकी प्रवृत्ति गुणित-धोलमानादि
प्रदेशरचनाका आश्रय करके हुई है ।

✽ ताप्रतिपाठोऽग्रम् । अ-काप्रत्योः ' मेडिय ' मप्रती ' सेचिय ', इति पाठः । ✽ अ-कप्रत्योः ' मम
यपबद्धाणं ' इति पाठः । ✽ अ-कप्रत्योः ' ठिदीणं ' इति पाठः नास्ति । ✽ अ-कप्रत्योः
' ण ' इति पाठः नास्ति ।

बिदियसमयसंचयस्त भागहारो दिवडुगुणहाणीणमद्धं सादिरियं । तं जहा— दिवडुगुणहाणीणमद्धं विरलिय समयपबद्धं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दो दो चरिमणिसेगा पावेति । पुणो हेट्टा णिसेगभागहारं दुगुणं विरलिय एगरूवधारदं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि गोवुच्छविसेसो पावदि । एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अन्नणिदे चरिमडुचरिमणितेयपमाणं होदि । अवणिदगोवुच्छविसेसो तप्पमाणेण कीरमाणे लद्धसलागपमाणायणं वुचचदे— रूवणहेट्टिमविरलणमेत्तविसेसेसु जदि एगरूवषक्खेवो लब्धदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणितमिच्छमोवट्टिय लद्धे दिवडुगुणहाणिअद्धम्मिं पक्खिविय समयपबद्धे भागे हिंहे बिदियसमयसंचओ आगच्छदि । एवं भागहारपरूवणा जाणिय कायव्वा जाव णेरइयचरिन्नसमयसंचिदव्वे त्ति । णवरि एगगुणहाणि—

द्वितीय समय सम्बन्धी संचयका भागहार साधिक डेढ गुणहानियोंका अर्ध भाग है । वह इस प्रकारसे— डेढ गुणहानियोंके अर्ध भागका विरलन कर समयप्रबद्धको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक अंकके प्रति दो दो चरम निषेक प्राप्त होते हैं । पुनः नीचे दुगुणे निषेकभाग— हारका विरलन कर एक अंकके प्रति गोपुच्छविशेष प्राप्त होता है । इस प्रमाणसे ऊपरके सब अंकोंके प्रति प्राप्त राशियोंके कम करनेपर चरम और द्विचरम निषेकोंका प्रमाण होता है । कम किये गये गोपुच्छविशेषको उसके प्रमाणसे करनेपर प्राप्त शलाकाओंके प्रमाणके लानेकी विधि बतलाते हैं— एक कम अधस्तन विरलन प्रमाण विशेषोंमें यदि एक अंकका प्रक्षेप पाया जाता है तो उपरिम विरलन प्रमाण विशेषोंमें कितने अंकोंका प्रक्षेप पाया जावेगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाकी अपवर्तित कर लब्धको डेढ गुणहानियोंके अर्ध भागमें मिलाकर समयप्रबद्धमें भाग देनेपर द्वितीय समय सम्बन्धी संचय आता है ।

उदाहरण— डेढ गुणहानि $\frac{111}{31}$; इसका अर्ध भाग $\frac{111}{62}$; $6300 \div \frac{111}{62} = 1024 = (412 \times 2)$; दुगुणा निषेक भागहार $16 \times 2 = 32$ (अधस्तन विरलन) $1024 - 32 = 992$ गोपुच्छविशेष । एक कम अधस्तन विरलन ($32 - 1 = 31$) प्रमाण विशेषोंमें यदि 1 अंकका प्रक्षेप होता है तो उपरिम विरलन ($\frac{111}{62}$) प्रमाण विशेषोंमें कितने अंकोंका प्रक्षेप होगा— $\frac{6300}{1024} \times \frac{1}{31} = \frac{6300}{1024 \times 31} = \frac{6300}{31744}$; $\frac{6300}{1024} + \frac{6300}{1024 \times 31} = \frac{32 \times 6300}{1024 \times 31}$;
 $6300 \div \frac{32 \times 6300}{1024 \times 31} = 992 = (412 + 820)$ द्वितीय समय सम्बन्धी संचय ।

इस प्रकार भागहारकी प्ररूपणा नारकीके अन्तिम समय सम्बन्धी संचय तक जानकर करना चाहिये । विशेष इतना है कि एक गुणहानि प्रमाण स्थान

मेत्तद्वाणं चडिदूण बद्धदब्बभागहारो किंचूणदोरूवाणि, सयलचरिमगुणहाणिदब्ब-
धारणादो । दोगुणहाणीओ चडिदूण बद्धदब्बभागहारो किंचूणेगरूवतिभागसहिदएगरूवं,
चरिम-दुचरिमगुणहाणिदब्बधारणादो । एवमुवरि सव्वत्थ सादिरेगमेगरूव भाग-
हारो होवि । भागहारपरूवणा गदा ।

एवं सव्वं पि दब्बं घेत्तूण समयपबद्धपमाणेण कवे कम्मट्टिदीए असंखेज्जभागमेत्ता
समयपबद्धा होंति, किंचूणदिवडूरूव षण्णणाणागुणहाणिसलागाहि गुणहाणिगुणिवमेत्त-
पमाणत्तादो । अधवा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता, सव्वसमयपबद्धाणमुक्क-
स्ससंचयस्स एकस्मिह काले असंभवादोऽऽ । एवमुबसंहारपरूवणा समत्ता ।

तव्वद्विरित्तमणुक्कस्सा ॥ ३३ ॥

तदो उक्कस्सादो वद्विरित्तं अं दब्बं तमणुक्कस्सवेयणा होवि । तं जहा— ओकडुणव-
सेण उक्कस्सदब्बे एगपरमाणुणा परिहीणे अणुक्कस्सुक्कस्सं होवि । एत्थ का परिहाणी?
अणंतभागपरिहाणी, उक्कस्सदब्बेण उक्क. सदब्बे भागे हिदे एगरूवोबलंभादो । ओकडु-
णवसेण दोपरमाणुपरिहीणे ॐ विदियमणुक्कस्सट्टाणमुप्पज्जदि । एसा वि अणंतभाग-
जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कुछ कम दो अंक है, क्योंकि, उसमें अन्तिम गुणहानिका
समस्त द्रव्य निहित है । दो गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार कुछ कम एक
अंकके तृतीय भागसे सहित एक अंक है, क्योंकि, उसमें चरम और द्विचरम गुणहानियोंका
द्रव्य निहित है । इसी प्रकारसे आगे सब जगह साधिक एक अंक भागहार होता है ।
भागहारकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस सब द्रव्यको ग्रहण कर समयप्रबद्धके प्रमाणसे करनेपर कर्मस्थितिके असंख्यातवें
भाग मात्र समयप्रबद्ध होते हैं, क्योंकि, वे कुछ कम डेढ अंकोंसे हीन नानागुणहानिकी शला-
काओंसे गुणहानिको गुणित करनेपर [(६ - ३) × ८] जो प्राप्त हो उतने मात्र हैं । अथवा
वे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं, क्योंकि, सब समयप्रबद्धोंके उत्कृष्ट संचयकी एक
कालमें सम्भावना नहीं है । इस प्रकार उपसंहारप्ररूपणा समाप्त हुई ।

ज्ञानावरणकी उत्कृष्ट वेदनासे भिन्न अनुत्कृष्ट द्रव्य वेदना है ॥ ३२ ॥

उससे अर्थात् उत्कृष्ट द्रव्यसे भिन्न जो द्रव्य है वह अनुत्कृष्ट द्रव्य वेदना है । यथा—
अपकर्षण वश उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे एक परमाणुके हीन होनेपर अनुत्कृष्ट द्रव्यका उत्कृष्ट स्थान
होता है ।

शंका— यहां कौनसी हानि होती है ?

समाधान— अनन्तभागहानि होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यमें उत्कृष्ट द्रव्यका भाग
देनेपर एक अंक प्राप्त होता है ।

अपकर्षण वश दो परमाणुओंकी हानि होनेपर द्वितीय अनुत्कृष्ट स्थान
उत्पन्न होता है । यह भी अनन्तभागहानि है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यके द्वितीय

❁ अ-कप्रत्यो: 'रूवं' इति पाठः ।

❁ प्रतिषु 'दिवडूरूवणेण' इति पाठः ।

❁ अप्रती 'संभवादो' इति पाठः ।

❁ अ-कारयो: 'परिहीणी' इति पाठः ।

परिहाणी । कुबो ? उक्कस्सदध्वदुभागेण उक्कस्सदध्वे भागे हिदे दोरुबोवलंभादो । पुणो उक्कस्सदध्वादो ओकडुणवत्तेण तिण्णं परमाणूणं वियोगे जादे अणंतभागपरिहाणी चेव, उक्कस्सदध्वतिभागेण उक्कस्सदध्वे भागे हिदे तिण्णिरुबुवलंभादो । एवमणंतभागहाणी चेव होदूण गच्छदि जाव जहण्णपरित्ताणंतेण उक्कस्सदध्वं खंडिय एगखंडे उक्कस्सदध्वादो परिहीणं ति । पुणो जहण्णपरित्ताणंतं विरलिय उक्कस्सदध्वं समखंडं करिय दिण्णे एक्केक्कस्स रुवस्स परिहीणदध्वपमाणं पावदि । पुणो हेट्ठिमट्टाणमिच्छामो ति एगरुवधरिदपमाणं हेट्टा विरलिय अण्णेगे^२ तप्पमाणं दध्वं समखंडं करिय दिण्णे विरलणरुवं पडि एगेगपरमाणू पावदि । पुणो तं उवरिमरुवधरिदेसु समयविरोहेण पक्खित्ते परिहीणदध्वं होदि एगरुवपरिहाणी च लब्भदि । हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणा अणंतगुणहीण ति एत्थ एगरुवपरिहाणी ण लब्भदि । पुणो केत्तियं लब्भदि ति उत्ते उच्चदे हेट्ठिमविरलणं रुवाहियं गंतूण जदि एगरुवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं

भागका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर दो अंक प्राप्त होते हैं । पुनः उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे अपकर्षण वश तीन परमाणुओंका वियोग होनेपर अनन्तभागहानि ही होती है, क्योंकि, उत्कृष्ट द्रव्यके तृतीय भागका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर तीन अंक प्राप्त होते हैं । इस प्रकार जघन्य परीतानन्तसे उत्कृष्ट द्रव्यको भाजित कर जो एक भाग प्राप्त हो उतना उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे हीन होने तक अनन्तभागहानि ही होकर जाती है । फिर जघन्य परीतानन्तका विरलन कर उत्कृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जितना द्रव्य हीन होता है उसका प्रमाण प्राप्त होता है । किन्तु यहां नीचेका स्थान लाना इष्ट है इसलिये पूर्वोक्त विरलनके एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणको नीचे विरलित कर दूसरे एकके प्रति प्राप्त हुए तत्प्रमाण द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है । पुनः उसको यथाविधि उपरिम विरलनके प्रत्येक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यमें मिलानेपर परिहीन द्रव्य होता है और एक अंककी हानि भी प्राप्त होती है । किन्तु अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन चूंकि अनन्तगुणी हीन है, अतः यहां एक अंककी हानि नहीं पायी जाती ।

शंका— तो फिर कितनी हानि पायी जाती है ?

समाधान— उत्तरमें कहते हैं कि एक अधिक अधस्तन विरलन प्रमाण स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें कितनी

लभामो ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एगरुवस्स अणंतिमभागे आग-
 च्छदि । पुणो एवं* जहण्णपरिताणंतम्मि सोहिय सुद्धसेसेण उक्कस्सदब्बे भागे हिदे
 पुव्विल्ललद्धादो* परमाणुत्तरमागच्छदि । एदम्मि उक्कस्सदब्बादो सोहिदे अणंत-
 हेट्टिमट्टाणमुप्पज्जदि । असंखेज्जाणंताणं विच्चाले उप्पत्तीदो एसा अवत्तव्वपरिहाणी ।
 अणंतभागहाणी वा, उक्कस्सअसंखेज्जादो उवरिमसंखाए घट्टमाणत्तादो । पुणो एग-
 रुवधरिदुभागं विरलिय उवरिमेगरुवधरिदं समखंडं करिय दिण्णे दो-दो परमाणु
 पावेंति । ते उवरिमविरलणरुवधरिदेषु समयाविरोहेण दादूण समकरणे कीरमाणे
 परिहीणरुवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा— रुवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण
 जदि एगरुवपरिहाणी लभदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो ति पमाणेण
 फलगुणिदिमिच्छामोवट्टिय लद्धं उवरिमविरलणाए अवणिय उक्कस्सदब्बे भागे हिदे
 परिहाणिदव्वमागच्छदि । तम्मि उक्कस्सदब्बम्मि सोहिदे सुद्धसेसं अणंतरट्टाणं
 होदि । एवं परमाणुत्तरादिकमेण णेदव्वं जाव अणंतभागहाणीए चरिमवियप्पो ति ।

हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार फल राशिसे इच्छा राशिको गुणित कर उसमें प्रमाण राशिका
 भाग देनेपर एक अंकका अनन्तवां भाग आता है ।

पुनः इसको जघन्य परीतानन्तमेंसे कम करके जो शेष रहे उसका उत्कृष्ट
 द्रव्यमें भाग देनेपर पूर्वोक्त लब्धसे एक परमाणु अधिक आता है । इसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे
 कम करनेपर अनन्तर अधस्तन स्थान उत्पन्न होता है । असंख्यातभागहानि और अनन्तभाग-
 हानिके बीचमें उत्पन्न होनेके कारण यह अवक्तव्यहानि है । अथवा इसे अनन्तभागहानि भी
 कह सकते हैं, क्योंकि, वह उत्कृष्ट असंख्यातसे उपरिम संख्यामें वर्तमान है । पुनः एक अंकके
 प्रति प्राप्त राशिके द्वितीय भागका विरलन कर उपरिम विरलन अंकके प्रति प्राप्त राशिको
 समखण्ड करके देनेपर दो दो परमाणु प्राप्त होते हैं । उनको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त
 द्रव्यमें यथाविधि देकर समीकरण करनेपर जो हीन अंक आते हैं उनका प्रमाण कहते हैं ।
 यथा— एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती
 है तो उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको
 अपवर्तित कर जो प्राप्त हो उसे उपरिम विरलनमेंसे घटाकर शेषका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग
 देनेपर परिहीन द्रव्य आता है । उसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर जो शेष रहे वह अनन्तर
 स्थान होता है । इस प्रकार एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे अनन्तभागहानिके अन्तिम
 विकल्प तक ले जाना चाहिये ।

संपहि उक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जं विरलेऊण एगरूवधरिवं समखंडं करिय दावूण समकरणे कीरमाणे परिहीणरूवाणं पमाणं वुच्चवे । तं जहा—रूवाहियहेट्टिमविरलण—मेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिवाए एगरूवं लब्भदि । तम्मि उवरिमविरलणाए अवणिदेऽऽ उक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जं होवि । तेणुक्कस्सदब्बे भागे हिदे असंखेज्जभागहाणिदव्वमागच्छदि । तम्मि उक्कस्सदब्बादो सोहिदे असंखेज्जभागहाणिद्वणं होवि । संपहि एदमुक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जं* विरलेवूण उक्कस्सदब्बं समखंडं करिय दिण्णे असंखेज्जभागहाणिदव्वं होवि । हेट्टा एगरूवधरिवं विरलेवूण पढमरूवधरिवं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एणेगपमाणू पावदि । तमुवरिमरूवधरिवेसु समयाविरोहेण दावूण समकरणं कदे परिहीणरूवपमाणं वुच्चवे । तं जहा—रूवाहियहेट्टिमविरलणः† मेत्तमद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी‡ लब्भदि तो उवरिमविरलणम्मि किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिय उवरिमविरलणाए अवणिद्वेण लद्वेण उक्कस्सदब्बे भागे हिदे असंखेज्जभागहाणिदव्वं होवि । तम्मि उक्कस्सदव्वम्मि सोहिदे विदियअसंखेज्जभागहाणिद्वणं होवि । एवं

अब उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका विरलन कर एक अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देकर समीकरण करनेपर जो परिहीन अंक आते हैं उनका प्रमाण कहते हैं । यथा—एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर एक अंक प्राप्त होता है । उसको उपरिम विरलनमेंसे कम करनेपर उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होता है । उसका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर असंख्यात भाग हीन द्रव्य आता है । उसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर असंख्यातभागहानिका स्थान होता है ।

अब इस उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका विरलन कर उत्कृष्ट द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर असंख्यात भाग हीन द्रव्य होता है । नीचे एक अंकके प्रति प्राप्त प्रमाणका विरलन कर प्रथम अंकके प्रति प्राप्त द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके प्रति एक एक परमाणु प्राप्त होता है । उसको उपरिम विरलनके द्रव्यमें यथाविधि देकर समीकरण करनेपर जो परिहीन अंक आते हैं उनका प्रमाण कहते हैं । यथा—एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि एक अंककी हानि पायी जाती है तो उपरिम विरलनमें वह कितनी पायी जावेगी, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित कर उपरिम विरलनमेंसे कम करके लब्धका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर असंख्यात भाग हीन द्रव्य होता है । उसको उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे कम करनेपर असंख्यातभागहानिका द्वितीय स्थान होता है । इस

❁ प्रतिषु ' अवणिद- ' इति पाठः ।

❁ प्रतिषु ' विरलिय- ' इति पाठः ।

❁ अ-काप्रत्योः ' -मुक्कस्समसंखेज्जासंखेज्जं ' इति पाठः ।

❁ ताप्रती ' परिहीणे (हाणी) ' इति पाठः ।

तद्वियादिसंखेज्जभागहाणिट्ठाणेषु उप्पाइज्जमाणेषु छेदभागहारो चेव होदूण गच्छदि ।
संपधि य उवरिमविरलणाए रूवणाए एगरूवधरिदं खंडिय तत्थेगखंडमेत्तवियप्पेसु
गदेषु समभागहारो होदि, रूवाहियहेट्ठिमविरलणाए उवरिमविरलणाए ओवट्टि-
दाए एगरूवोवलंभादो । एवं छेदभागहार-समभागहारेहि ताव णेदव्वं जाव उक्क-
स्सदव्वादो एगो गोवुच्छविसेसो परिहीणो त्ति ।

तत्थ को भागहारो होदि त्ति उत्ते उच्चदे- अंगुलस्स असंखेज्जविभागेण गुणिददिव-
डुगुणहाणीयो रूवाहियगुणहाणीए पट्टुप्पणाओ । तं जहा- उक्कस्सदव्वे दिवडुगुणहाणि-
गुणिदअंगुलस्स असंखेज्जविभागेण भागे हिदे चरिमणिसेगो आगच्छदि । तस्मि रूवा-
हियगुणहाणिणा ओवट्टिदे एगो गोवुच्छविसेसो आगच्छदि त्ति । एवं परमाणुत्तरादिकमेण
गंतूणक्कस्सदव्वादो एगसमयपबद्धे परिहीणे का परिहाणी ? असंखेज्जभागपरिहाणी ;
किंचूणदिवडुगुणहाणीहि उक्कस्सदव्वे भागे हिदे एगसमयपबद्धुवलंभादो । एदेसिमणु-

प्रकार तृतीय आदि असंख्यातभागहानिस्थानोंके उत्पन्न कराते समय छेदभागहार ही
होकर जाता है ।

अब एक कम उपरिम विरलनसे एक विरलन अंकके प्रति प्राप्त राशिको खण्डित
कर उसमें एक खण्ड प्रमाण विकल्पोंके वीतनेपर समभागहार होता है, क्योंकि, एक अधिक
अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनको अपवर्तित करनेपर एक अंक पाया जाता है । इस
प्रकार छेदभागहार और समभागहारसे तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि उत्कृष्ट
द्रव्यमेंसे एक गोपुच्छविशेष हीन नहीं हो जाता ।

शंका— वहां कौनसा भागहार होता है ?

समाधान— इसके उत्तरमें कहते हैं कि एक अधिक गुणहानिसे व अंगुलके
असंख्यातवें भागसे गुणित डेढ गुणहानियां भागहार होती हैं । यथा—
उत्कृष्ट द्रव्यमें डेढ गुणहानिगुणित अंगुलके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर
अन्तिम निषेक आता है । उसको एक अधिक गुणहानिसे अपवर्तित करनेपर एक
गोपुच्छविशेष आता है ।

शंका— इस प्रकार एक परमाणु अधिक आदिके क्रमसे जाकर उत्कृष्ट द्रव्यमेंसे
एक समयप्रबद्धके हीन होनेपर कौनसी हानि होती है ?

समाधान— असंख्यातभागहानि होती है, क्योंकि, कुछ कम डेढ गुण-
हानिका उत्कृष्ट द्रव्यमें भाग देनेपर एक समयप्रबद्ध पाया जाता है ।

☉ प्रतिष् 'विरलणा' इति पाठः ।

☉ प्रतिष् 'गुणहाणीदव्वअंगुलस्स', सप्रती 'गुणहाणीदअंगुलस्स' इति पाठः ।

वकस्सपदेसट्टाणाणं गुणिदकम्मंसिओ सामी, अविणट्टगुणिदकिरियाए आगयाणं पि ओकड्डुक्कहुणवसेण एगसमयपबद्धमेत्तपरमाणूणं वड्ढि-हाणिदंसणादो । गुणिदकम्मंसियम्मि एदेहिओ अहियाणि ट्टाणाणि किण्ण होंति ? ण, गुणिदकम्मंसिए उक्कस्सेण एगो चैव समयपबद्धो वड्ढि हायदि त्ति आइरियपरंपरागयउवएसादो । एदम्हादो गुणिदकम्मंसियअणुक्कस्सजहण्णपदेसट्टाणादो गुणिद—घोलमाणउक्कस्सपदेसट्टाणं विसेसाहियं होदि । होंतं पि असंखेज्जविभागुत्तरं एवं मोत्तूण गुणिदकम्मंसियजहण्णपदेसट्टाणपमाणं गुणिदघोलमाणअणुक्कस्सपदेसट्टाणं घेत्तूण परमाणुहीण—दुपरमाणुहीणादिसरूवेण ऊणं करिय णेदव्वं जाव गुणिद—घोलमाणउक्कस्सपदेसट्टाणादो असंखेज्जगुणहीणं तस्सेव जहण्णपदेसट्टाणं ति । एदेसिमप्पणो गुणिदकम्मंसियजहण्णपदेसट्टाणसमाणगुणिद—घोलमाणपदेसट्टाणादो अणंतभागहीणमसंखेज्जभागहीणसंखेज्जभागहीण—संखेज्जगुणहीण—असंखेज्जगुणहीणसरूवेण परिहीणट्टाणाणं गुणिदघोलमाणो सामी । कुदो ? गुणिद—घोलमाणट्टाणाणं पंचवड्ढि—पंचहाणीओ होंति त्ति गुरूवएसादो । पुणो एदम्हादो गुणिद—घोलमाणजहण्ण—अणुक्कस्स—

इन अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थानोंका गुणितकर्मांशिक जीव स्वामी होता है, क्योंकि, विनाशको नहीं प्राप्त हुए गुणित क्रियासे जो कर्म आते हैं उनमें अपकर्षण और उत्कर्षणके वश एक समयप्रबद्ध मात्र परमाणुओंकी वृद्धि व हानि देखी जाती है ।

शंका— गुणितकर्मांशिक जीवके इनसे अधिक स्थान क्यों नहीं होते ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, गुणितकर्मांशिक अवस्थामें रूपसे एक समयप्रबद्ध ही बढता और घटता है, ऐसा आचार्यपरम्परागत उपदेश है ।

गुणितकर्मांशिकके इस अनुत्कृष्ट जघन्य प्रदेशस्थानसे गुणितघोलमानका उत्कृष्ट प्रदेशस्थान विशेष अधिक है । विशेष अधिक होकर भी असंख्यातवें भागसे अधिक होता है । इसको छोडकर और गुणितकर्मांशिकके जघन्य प्रदेशस्थानके बराबर गुणितघोलमान अनुत्कृष्ट प्रदेशस्थानको ग्रहण करके एक परमाणु हीन दो परमाणु हीन इत्यादि रूपसे कम करके जब तक गुणितघोलमानके उत्कृष्ट प्रदेशस्थानसे असंख्यातगुणा हीन उसका ही जघन्य प्रदेशस्थान नहीं प्राप्त होता तब तक ले जाना चाहिये ।

अपने इन गुणितकर्मांशिक सम्बन्धी जघन्य प्रदेशस्थानके समान गुणितघोलमानके प्रदेशस्थानसे अनन्त भाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यातगुणे हीन व असंख्यातगुणे हीन स्वरूपसे परिहीन स्थानोंका गुणितघोलमान स्वामी है; क्योंकि, गुणितघोलमान सम्बन्धी स्थानोंकी पांच वृद्धियां व पांच हानियां होती हैं, ऐसा गुरुका उपदेश है । पुनः गुणितघोलमानके इस जघन्य

ट्टाणादो खविद-घोलमाणउक्कस्सपदेसट्टाणमसंखेज्जगुणं होदि । एवं मोत्तूण गुणिद-घोलमाणजहण्णट्टाणसमाणं खविद-घोलमाणट्टाणं घेत्तूण एग-दोपरमाणुआदिकमेण ऊणं करिय अणंतभागहाणी-असंखेज्जभागहाणीहि णेदव्वं जाव खविद-घोलमाणएइ-दियजहण्णदव्वे त्ति । पुणो एदेण समाणं खीणकसायच्चरिमसमयदव्वं घेत्तूण अणंत-भागहाणि-असंखेज्जभागहाणीहि ऊणं करिय णेदव्वं जाव खविद-घोलमाणओघजह-ण्णदव्वे त्ति । पुणो एदेण सरिसं खविदकम्मंसियदव्वं घेत्तूण दोहि परिहाणीहि णेदव्वं जाव खविदकम्मंसियओघजहण्णदव्वे त्ति । खविदकम्मंसिये किमट्ठं दो चेव हाणीओ ? ण एस दोसो, खविदगुणिदकम्मंसिएसु एगसमयपबद्धपरमाणुमेत्ताणं चेव पदेसट्टाणाणमुवलंभादो ।

एत्थ गुणिदकम्मंसिय-गुणिदघोलमाण-खविदघोलमाण-खविदकम्मंसिए^७ जीवे अस्सिदूण अपुणरुत्तट्टाणपरूवणं कस्सामो-खीणकसायजहण्णदव्वस्सुवरि परमाणुत्तर-दुपरमाणुत्तरकमेण अणंतभागवड्ढीए अणंताणि अपुणरुत्तट्टाणाणि गंतूण असंखेज्जभागवड्ढी पारभदि । पुणो परमाणुत्तरकमेण असंखेज्जभागवड्ढीए अणंतेसु ठाणेसु णिरंतरं गदेसु खविद-घोलमाणजहण्णदव्वं खविदकम्मंसिय-अजहण्णदव्वसमाणं दिस्सदि । तं पुणरुत्तट्टाणं होदि । पुणो परमाणु--

अनुत्कृष्ट स्थानसे क्षपित घोलमानका उत्कृष्ट प्रदेशस्थान असंख्यातगुणा है । इसे छोडकर और गुणितघोलमानके जघन्य स्थानके सदृश क्षपितघोलमानके स्थानको ग्रहण कर एक दो परमाणु आदिके क्रमसे हीन करके अनन्तभागहीन और असंख्यातभागहानिसे क्षपितघोलमान एकेन्द्रियके जघन्य द्रव्य तक ले जाना चाहिये ।

पुनः इसके समान क्षीणकषायके अन्तिम समय सम्बन्धी द्रव्यको ग्रहण कर अनन्त-भागहानि और असंख्यातभागहानिसे हीन करके क्षपितघोलमानके ओघ जघन्य द्रव्य तक ले जाना चाहिये । फिर इसके सदृश क्षपितकर्माशिकके जघन्य द्रव्यको ग्रहण कर दो हानियों द्वारा क्षपितकर्माशिकके ओघ जघन्य द्रव्य तक ले जाना चाहिये ।

शंका- क्षपितकर्माशिकके केवल दो ही हानियां क्यों होती हैं ?

समाधान- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, क्षपितकर्माशिक और गुणितकर्माशिक जीवमें एक समयप्रबद्धके परमाणुओंके बराबर ही प्रदेशस्थान पाये जाते हैं ।

यहां गुणितकर्माशिक, गुणितघोलमान, क्षपितघोलमान और क्षपितकर्माशिक जीवोंका आश्रय करके पुनरुक्त स्थानोंकी प्ररूपणा करते हैं- क्षीणकषाय सम्बन्धी जघन्य द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक, दो परमाणु अधिक इत्यादि क्रमसे अनन्तभाग-वृद्धिके अनन्त अपुनरुक्त स्थान जाकर असंख्यातभागवृद्धिका प्रारंभ होता है । पुनः परमाणु अधिक क्रमसे असंख्यातभागवृद्धिके अनन्त स्थानोंके निरन्तर बीतनेपर क्षपितघोलमानका जघन्य द्रव्य क्षपितकर्माशिकके अजघन्य द्रव्यके समान दिखता

त्तरं वड्ढिदे खविद-घोलमाणस्स अणंतभागवड्ढी होदि । तं पि ट्ठाणं पुणरत्तमेव । एवं पुणरत्तापुणरत्तसरूवेण अणंत-असंखेज्जभागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण खविद-घोलमाण-अणंतभागवड्ढी परिहायदि । से काले खविदघोलमाणो असंखेज्जभागवड्ढि पारमदि । तं पि पुणरत्तट्ठाणमेव । एवं पुणरत्तापुणरत्तसरूवेण दोसु वि असंखेज्ज-भागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण खविदकम्मंसियअसंखेज्जभागवड्ढी परिहायदि । तम्हि खेवुद्देसे खविदकम्मंसियट्ठाणाणि समप्पंति । एदेसु उत्तट्ठाणसे खविदघोलमाण-जहण्णपदेसट्ठाणादो हेट्ठिमाणमणुक्कस्सट्ठाणाणं खविदकम्मंसिओ खेव सामी । उवरिमाणं खविदकम्मंसिओ खविदघोलमाणो च सामिणो । पुणो खविदघोलमाणतदणंतरअसं-खेज्जभागवड्ढिट्ठाणमपुणरत्तं होदि । विदियं पि अपुणरत्तं खेव । एदमपुणरत्तसरूवेण दूरं गंतूण गुणिदघोलमाणजहण्णट्ठाणेण सरिसं होदि । एदम्हादो हेट्ठिमाणं खविद-कम्मंसियउक्कस्सादो उवरिमाणं पदेसट्ठाणाणं खविदघोलमाणो खेव सामी । गुणिद-घोलमाणजहण्णट्ठाणं पुणरत्तं । पुणो परमाणुत्तरं वड्ढिदे पुणरत्तमणंतभागवड्ढिट्ठाणं होदि । एवं पुणरत्तापुणरत्तसरूवेण अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढीसु गच्छमाणासु दूरं गंतूण अणंतभागवड्ढी परिहायदि । से काले गुणिदघोलमाण-

है । वह पुनरुक्त स्थान है । पुनः एक परमाणु अधिक क्रमसे वृद्धिके होनेपर क्षपितघोलमान जीवके अनन्तभागवृद्धि होती है । वह भी स्थान पुनरुक्त ही है । इस प्रकार पुनरुक्त-अपुनरुक्त स्वरूपसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धिके चालू रहनेपर बहुत दूर जाकर क्षपितघोलमान जीवके अनन्तभागवृद्धिकी हानि होती है । अनन्तर समयमें क्षपितघोलमान जीव असंख्यातभागवृद्धिको प्रारम्भ करता है । वह भी पुनरुक्त स्थान ही है । इस प्रकार पुनरुक्त और अपुनरुक्त स्वरूपसे दोनों ही असंख्यातभागवृद्धियोंके चालू रहनेपर दूर जाकर क्षपितकर्माशिककी असंख्यातभागवृद्धि हीन हो जाती है और उसी स्थानमें क्षपितकर्माशिकके स्थान समाप्त हो जाते हैं । इन उपर्युक्त स्थानोंमें क्षपितघोलमानके जघन्य प्रदेशस्थानसे नीचेके अनुत्कृष्ट स्थानोंका क्षपितकर्माशिक ही स्वामी है । उपरिम स्थानोंका क्षपितकर्माशिक और क्षपितघोलमान दोनों स्वामी हैं ।

पुनः क्षपितघोलमानका तदनन्तर असंख्यातभागवृद्धिका स्थान अपुनरुक्त होता है । दूसरा स्थान भी अपुनरुक्त ही होता है । इस प्रकार यह स्थान अपुनरुक्त स्वरूपसे दूर जाकर गुणितघोलमानके जघन्य स्थानके सदृश होता है । इससे अधस्तन और क्षपितकर्माशिकके उत्कृष्टमे उपरिम प्रदेशस्थानोंका क्षपितघोलमान ही स्वामी है । गुणितघोलमानका जघन्य स्थान पुनरुक्त है । पुनः एक आदि परमाणुकी वृद्धि होनेपर अनन्तभागवृद्धिका पुनरुक्त जघन्य स्थान होता है । इस प्रकार पुनरुक्त-अपुनरुक्त स्वरूपसे अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातभागवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर (गुणितघोलमानकी) अनन्तभागवृद्धि हीन हो जाती है । अनन्तर समयमें गुणितघोलमानके असंख्यातभागवृद्धि-

असंखेज्जभागवड्डी पारभदि । सा वि पुणरुत्ता चेव । पुणो दोसु वि असंखेज्जभागवड्डीसु गच्छमाणसु दूरं गंतूण खविदघोलमाण असंखेज्जभागवड्डी परिहायदि । से काले संखेज्जभागवड्डी पारभदि । एवं संखेज्जभागवड्डी-असंखेज्जभागवड्डीसु गच्छमाणसु दूरं गंतूण गुणिवघोलमाण असंखेज्जभागवड्डी परिहायदि । से काले संखेज्जभागवड्डी पारभदि । एवं दोष्णं पि संखेज्जभागवड्डीणं गच्छमाणं खविदघोलमाणसंखेज्जभागवड्डी परिहायदि । से काले संखेज्जगुणवड्डी पारभदि । एवं संखेज्जभागवड्डी-संखेज्जगुणवड्डीणं गच्छमाणं दूरं गंतूण गुणिवघोलमाणसंखेज्जभागवड्डी परिहायदि । संखेज्जगुणवड्डी पारभदि । एवं दोष्णं पि संखेज्जगुणवड्डीणं गच्छमाणं खविदघोलमाणसंखेज्जगुणवड्डी परिहायदि । असंखेज्जगुणवड्डी पारभदि । पुणो असंखेज्जगुणवड्डी-संखेज्जगुणवड्डीणं गच्छमाणं दूरं गंतूण गुणिवघोलमाणसंखेज्जगुणवड्डी परिहायदि, असंखेज्जगुणवड्डी पारभदि । एवं पुणरुत्तापुणरुत्तरूवेण दोष्णं पि असंखेज्जगुणवड्डीणं गच्छमाणं दूरं गंतूण खविदघोलमाणसंखेज्जगुणवड्डी परिहायदि । एसो हेट्ठिमाणं गुणिवघोलमाणजहण्णादो उवरि---

का प्रारम्भ होता है । वह भी पुनरुक्त ही है । पुनः दोनों ही असंख्यातभागवृद्धियोंके चालू रहनेपर दूर जाकर क्षपितघोलमान जीवके असंख्यातभागवृद्धिकी हानि हो जाती है । अनन्तर समयमें संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ होता है । इस प्रकार संख्यातभागवृद्धि व असंख्यातभागवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितघोलमानके असंख्यातभागवृद्धिकी हानि हो जाती है । अनन्तर समयमें संख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार दोनोंके ही संख्यातभागवृद्धियोंके चालू रहनेपर क्षपितघोलमानके संख्यातभागवृद्धिकी हानि हो जाती है । अनन्तर समयमें संख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है इस प्रकार संख्यातभागवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितघोलमानके संख्यातभागवृद्धिकी हानि हो जाती है और संख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार दोनोंके ही संख्यातगुणवृद्धियोंके चालू रहनेपर क्षपितघोलमानके संख्यातगुणवृद्धिकी हानि हो जाती है और असंख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । पुनः असंख्यातगुणवृद्धि और संख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितघोलमानके संख्यातगुणवृद्धिकी हानि हो जाती है और असंख्यातगुणवृद्धिका प्रारम्भ हो जाता है । इस प्रकार पुनरुक्त व अपुनरुक्त स्वरूपसे दोनोंके ही असंख्यातगुणवृद्धियोंके चालू रहनेपर दूर जाकर क्षपितघोलमानके असंख्यातगुणवृद्धिकी हानि हो जाती है । इससे नीचेके और गुणितघोलमानके जघन्य स्थानसे ऊपरके प्रदेशस्थानोंके क्षपितघोलमान और

❁ अ-काप्रत्योः 'खविदघोलमाणे' इति पाठः । ❁ प्रतिवु 'असंखेज्ज' इति पाठः । ❁ काप्रती 'परिहायदि' इति पाठः । ❁ प्रतिवु 'असंखेज्जभागवड्डी' इति पाठः । ❁ अप्रती 'कुणुण्डि' इति पाठः ।

माणं पदेसट्टाणाणं वड्ढिवगुणिवधोलमाणं सामिणो । तदो जं अणंतरमसंखेज्जगुण-
वड्ढिट्टाणं तं गुणिवधोलमाणस्स अपुणरुत्तं भवदि । एवमपुणरुत्तसरूवेण गुणिवधो-
लमाणअसंखेज्जगुणवड्ढिपदेसट्टाणेषु गच्छमाणेषु दूरं गंतूण गुणिवकम्मंसियजहण्णपदे-
सट्टाणं विस्सवि । तं पुणरुत्तं होदि । पुणो परमाणुत्तरं वड्ढिदे तस्स अणंतभागवड्ढि-
पदेसट्टाणं होदि । तं पि पुणरुत्तं होदि । एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण अणंतभागवड्ढि-
असंखेज्जगुणवड्ढीणं गच्छमाणं दूरं गंतूण गुणिवकम्मंसियस्स अणंतभागवड्ढी
परिहायदि, असंखेज्जभागवड्ढी पारभवदि । तं पि पुणरुत्तपदेसट्टाणं होदि ।
एवं पुणरुत्तापुणरुत्तसरूवेण असंखेज्जभागवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढीणं गच्छमाणं
अणंताणि ट्टाणाणि गंतूण गुणिवधोलमाणअसंखेज्जगुणवड्ढी-समप्पदि । एत्तो
प्पहुडि हेट्ठिमाणं गुणिवकम्मंसियजहण्णपदेसट्टाणपज्जवसाणाणं गुणिवधोलमाणो गुणि-
वकम्मंसियो च सामो । एत्तो अणंतरमुवरिमपदेसट्टाणं गुणिवकम्मंसियस्स चैव होदि ।
तं च अपुणरुत्तं । एवं णेद्वं जाव गुणिवकम्मंसियस्स उक्कस्सट्टाणे त्ति । पुणो एत्थ
उक्कस्सपदेसट्टाणम्मि जहण्णपदेसट्टाणे सोहिदे जेतिया परमाणू अवसेसा तेत्तियमेत्ताणि
णाणावरणस्स अणुक्कस्सपदेसट्टाणाणि । उक्कस्सपदेससामियस्स लक्खणं पुवं परुविदं ।
जहण्णपदेससामियस्स लक्खणमुवरि भणिहिदि ॐ । अवसेसाणमगंताणं ठाणाणं जे
सामिणो जीवा तेसि लक्खणं किण्ण परुविदं ? ण एस दोसो, जहण्णुक्कस्सपदेसट्टाण-

गुणितघोलमान जीव स्वामी हैं । उससे अनन्तर जो असंख्यातगुणवृद्धिका स्थान है वह गुणि-
तघोलमानके अपुनरुक्त होता है । इस प्रकार अपुनरुक्त स्वरूपसे गुणितघोलमानके असंख्यात-
गुणवृद्धिप्रदेशस्थानोंके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितकर्माशिकका जघन्य प्रदेशस्थान दिखता
है । वह पुनरुक्त है । फिर एक आदि परमाणुकी वृद्धि होनेपर उसके अनन्तभागवृद्धिप्रदेश-
स्थान होता है । वह भी पुनरुक्त होता है । इस प्रकार पुनरुक्त और अपुनरुक्त स्वरूपसे
अनन्तभागवृद्धि और असंख्यातगुणवृद्धिके चालू रहनेपर दूर जाकर गुणितकर्माशिकके अनन्त-
भागवृद्धिकी हानि हो जाती है और असंख्यातभागवृद्धिका प्रारम्भ होता है । वह भी पुनरुक्त
प्रदेशस्थान है । इस प्रकार पुनरुक्त-अपुनरुक्त स्वरूपसे असंख्यातभागवृद्धि और असंख्यातगु-
णवृद्धिके चालू रहनेपर अनन्त स्थान जाकर गुणित घोलमानके असंख्यातगुणवृद्धि समाप्त हो
जाती है । यहाँसे लेकर नीचेके गुणितकर्माशिक सम्बन्धी जघन्य प्रदेशस्थान पर्यन्त स्थानोंका
गुणितघोलमान और गुणितकर्माशिक जीव स्वामी हैं । इससे अनन्तरका उपरिम प्रदेशस्थान
गुणितकर्माशिकके ही होता है । वह अपुनरुक्त है । इस प्रकार गुणितकर्माशिकके उत्कृष्ट
स्थानके प्राप्त होने तक ले जाना चाहिये । पश्चात् यहाँ उत्कृष्ट प्रदेशस्थानमेंसे जघन्य
प्रदेशस्थानको कम करनेपर जितने परमाणु शेष रहते हैं उतने मात्र ज्ञानावरणके अनुत्कृष्ट
प्रदेशस्थान हैं । उत्कृष्ट प्रदेशस्थानके स्वामीका लक्षण पूर्वमें कहा जा चुका है । जघन्य
प्रदेशस्थानके स्वामीका लक्षण आगे कहा जायगा ।

✪ वा प्रती ' वड्ढिट्टाणंतरं ' इति पाठः ।

✪ अ-काप्रसो: ' वणिदेहिणो ', ताप्रती ' वणिहिणो ', मप्रती ' वणिहिणो ' इति पाठः ।

सामियाणं लक्खणे परूविदे तेसिं दोण्णं पदेसट्टाणाणं विच्चाले ५ वट्टमाणसेसट्टाण-
सामियाणं पि लक्खणस्स तत्तो चेव सिद्धीदो । तं जहा— जहण्णट्टाणप्पहुडिएगसम-
यपबद्धमेसट्टाणाणं जे सामिणो तेसिं जीवाणं खविदकम्मंसियलक्खणमेव लक्खणं
होदि । समाणलक्खणाणं कधं दव्वभेदो ? ण, छावासएहि परिसुद्धाणं पि ओकड्डु-
क्कड्डुणवसेण पदेसट्टाणभेदसंभवं पडि विरोहाभावादो । उक्कस्सट्टाणादो वि हेट्टिमाणं
समयपबद्धमेसट्टाणाणं जे सामिणो तेसिं गुणिदकम्मंसियलक्खणमेव लक्खणं होदि,
छावासएहि भेदभावादो । अवसेसाणं ट्टाणाणं जे सामिणो तेसिं जीवाणं लक्खणं
खविद-गुणिदलक्खणसंजोगो । सो च एगादिसंजोगजणिदवासट्टिविहो । तवो खविद-
गुणिदकम्मंसियलक्खणोहितो जच्चंतरीभूद ६ मजहण्णमणुक्कस्सट्टाणाहार ७ जीवाणं
ण ८ लक्खणमत्थि त्ति । तेण तेसिं पुध ण लक्खणपरूवणा कीरदि त्ति सिद्धं ।

एत्थ तसजीवपाओगपदेसट्टाणेसु ९ जीवा पवरस्स असंखेज्जविभागमेत्ता । एइंदिय-

शंका— शेष अनन्त स्थानोंके जो जीव स्वामी है उनका लक्षण क्यों नहीं कहा ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जघन्य और उत्कृष्ट प्रदेशस्थानोंके स्वामियोंके लक्षणकी प्ररूपणा करनेपर उन दो प्रदेशस्थानोंके अन्तरालमें रहनेवाले शेष समस्त स्थानोंके स्वामियोंका भी लक्षण उसीसे ही सिद्ध है । यथा जघन्य स्थानसे लेकर एक समय-प्रबद्ध मात्र स्थानोंके जो स्वामी हैं उन जीवोंका क्षपितकर्मांशिक लक्षण ही लक्षण होता है ।

शंका— समान लक्षणवालोंके द्रव्यका भेद कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, छह आवासोंसे परिशुद्ध जीवोंके भी अपकर्षण और उत्कर्षणके वश प्रदेशस्थानोंके भेदोंकी सम्भावनामें कोई विरोध नहीं है ।

उत्कृष्ट स्थानसे भी नीचेके समयप्रबद्ध मात्र स्थानोंके जो स्वामी हैं उनका गुणितकर्मांशिक लक्षण ही लक्षण होता है, क्योंकि, उनमें छह आवासोंकी अपेक्षा कोई भेद नहीं है । शेष स्थानोंके जो जीव स्वामी हैं उन जीवोंका लक्षण क्षपित और गुणित लक्षणोंका संयोग है । वह भी एक आदिके संयोगसे उत्पन्न होकर बासठ प्रकारका है । इस कारण अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थानोंके आधारभूत जीवोंका क्षपितकर्मांशिक और गुणितकर्मांशिकके लक्षणोंसे भिन्न जातिका दूसरा कोई लक्षण नहीं है । इसलिये उनके लक्षणोंका पृथक् कथन नहीं करते हैं, यह सिद्ध होता है ।

यहां त्रस जीवोंके योग्य प्रदेशस्थानोंमें जीव प्रतरके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । एकेन्द्रिय जीवोंके योग्य स्थानोंमें अनन्त जीव हैं । यहां त्रस जीवोंके योग्य स्थानोंके जीवसमुदाहारकी प्ररूपणामें छह अनुयोगद्वार हैं— प्ररूपणा, प्रमाण, श्रेणि,

५ अश्रती 'पदेसट्टाणाणं जे सामिणो विच्चाले' इति पाठः । ६ अ-काप्रत्योः 'जच्चंतरीभूद' इतिपाठः ।

७ अश्रती 'ट्टाणहार' इति पाठः । ८ ताश्रती नोपलभ्यते पदमिदम् । ९ ताश्रती 'पाओग्गट्टाणेसु' इति पाठः ।